पाठ-6

रामलाल का परिवार

- संकलित

आइए सीखें

■ एकांकी विधा से परिचय ■ हाव-भाव और अभिनय के साथ संवाद बोलना ■ परिवार का महत्व ■ आपसी-प्रेम व सद्‌भाव जैसे गुण ■ विलोम एवं संज्ञा शब्द ■ वाक्य प्रयोग, तत्सम एवं पर्यायवाची शब्द।

रामलाल : बेटा बिरजू! चन्दू कहाँ है?

बिरजू : दादा-दादी को भोजन कराकर अभी-अभी दुकान पर गया है पिताजी।

रामलाल : अच्छा किया। बड़े-बूढ़ों का ध्यान रखना हमारा कर्त्तव्य है। चन्दू में अब बहुत समझ आ गई है।

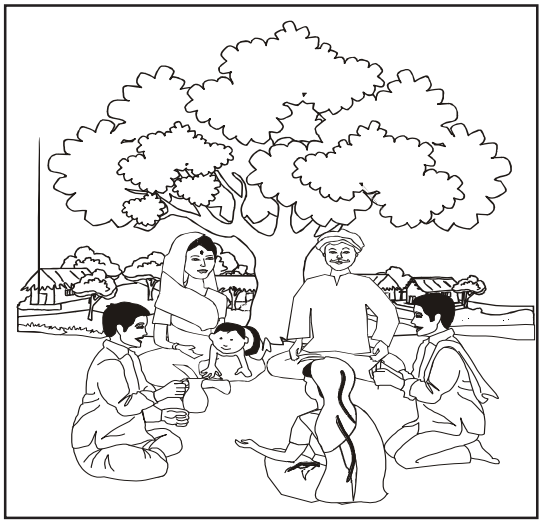

बिरजू : हाँ पिताजी, अब तो वह रोजाना बड़ों के चरण छूता है, समय पर दुकान जाता है। माँ जो कह देती है, वह काम तुरंत करता है।

रामलाल : मैं भी यही देख रहा हूँ। बहुत अच्छा है। परिवार में सब अपना-अपना काम करें, एक दूसरे का आदर करें, उससे अधिक हमें और क्या चाहिए बिरजू!

बिरजू : पिताजी, पास वाली बुआजी दो दिन से बीमार हैं। यदि खेत चलने में देरी हो तो मैं उधर हो आता हूँ।

शिक्षण संकेत

▶ कक्षा में एकांकी के पात्रों की भूमिका छात्रों को सौंपे और संवादों का वाचन करवाएँ ▶ इसी प्रकार की अन्य एकांकी का चयनकर विद्यालय में उसका मंचन करवाएँ ▶ विद्यार्थियों को परिवार, पास-पड़ोस और समाज का महत्व समझाएँ।

रामलाल : हाँ हाँ, मैं भी अभी उधर से ही आया हूँ। पन्द्रह दिन पहले ही उन्होंने अपनी बेटी का विवाह किया है, वह भी अब ससुराल चली गई। कोई सँभालने वाला है नहीं, देखो; बुआ से पूछ लेना, किसी बात के लिए संकोच न करें।

बिरजू : ठीक है पिताजी! आप भोजन कर विश्राम करें तब तक मैं बुआ के लिए दवा का प्रबन्ध कर आता हूँ।

रामलाल : चन्दू! कैसे आ गए तुम? क्या आज दुकान पर काम नहीं?

चन्दू : काम तो बहुत है पिताजी। मेले के दिन भी हैं। आज बैंक में चक्की के कर्ज की किश्त जमा करनी थी, उसे जमा करा आया हूँ। जो लिया है उसे समय पर देना भी तो है।

रामलाल : बात बहुत समझ की कही चन्दू। हाँ यह बताओ, लछमी (लक्ष्मी) के यहाँ से कोई पत्र आया कि नहीं?

चन्दू : पत्र तो नहीं आया, पर पड़ोस के बीरम काका वहाँ से आए हैं। उन्होंने दादाजी को समाचार दे दिए हैं। वे कह रहे थे कि वह होली पर आएगी।

रामलाल : अच्छा है, उससे मिले भी कई दिन हो गए। आएगी तो अपने दादा-दादी से भी मिल जाएगी। कई बार याद करते हैं।

चन्दू : पिताजी, दादा-दादी को तो हम सबसे बहुत ही मोह है। थोड़ी देर भी दिखाई न दें, तो कई बार पुकार लेते हैं।

रामलाल : ऐसा ही होता है चन्दू। हाँ, तुम्हें ध्यान है न, कि आज मेले में शिक्षाप्रद नाटक का कार्यक्रम है। बिरजू के साथ तुम भी चले जाना और दादाजी को भी ले जाना।

चन्दू : पिताजी, मुझसे तो उन्होंने कल शाम को ही कह दिया था।

रामलाल : अच्छा। (दोनों हँस पड़ते हैं)

(रामलाल ने भोजन कर विश्राम किया। बिरजू आ गया था। दोनों खेत पर चले गए। फसल का समय है। साँझ हुई। बिरजू और चन्दू दोनों घर आकर प्रतिदिन की तरह दादा-दादी के पास चले गए।)

दादा : बिरजू बेटा, आज पास के मकान में झगड़ा हो रहा था। क्या बात थी?

बिरजू : बीरम काका का लड़का छुट्टियों में शहर से घर आया है दादाजी। काका उसे खेत की रखवाली करने के लिए कह रहे थे; किन्तु वह आनाकानी कर रहा था। बात ही बात में कहा-सुनी हो गई।

दादा : यह बात थी। बिरजू यह तो असभ्यता है। पढ़ाई, परिश्रम से घृणा तो नहीं सिखाती। परिश्रम के बिना कौन-सा काम हो सकता है? क्या बीरम काका ने उससे नहीं पूछा?

चन्दू : दादा, घर-घर की बात है, लेकिन लोग समझें तब न!

दादा : हाँ चन्दू बेटा, अब तुम भी घर आने पर अपनी माँ की मदद किया करो। देखो, प्रातः से सायं तक वह कितना काम करती है।

चन्दू : (हँसते हुए) दादाजी, कल से ढोरों को सँभालने का काम तो मैं करने लग गया हूँ। अब तो ठीक है न।

बिरजू : दादाजी आज तो मेले चलोगे न?

दादा : हाँ बिरजू, चलेंगे, लेकिन तुम दोनों साथ चलो तब। बुढ़ापा है, कहीं गिर जाऊँ तो उठा लाना।

(दादा कभी-कभी ऐसी बातें कर परिवार में सरसता को और बढ़ा देते थे। एक बार चन्दू ने उनसे पूछ लिया था, ''दादाजी आपने अपने दाँत कहाँ रखे?''

दादाजी ने तब चन्दू के मुँह की ओर संकेत करते हुए कहा था—''मेरे दाँत अपने मुँह में छिपाकर मुझसे पूछता है।'' तब सब ठहाका मार कर हँस पड़े थे।)

(इसी बीच रामलाल भी वहाँ आ गए।)

रामलाल : बुआ का अब क्या हाल है बिरजू?

बिरजू : हाँ, अब कुछ आराम है।

दादा : बेटा, उसे जरूर सँभाल आया करो। अकेली है बेचारी। पति में कई बुरी आदतें थीं। समझाया भी बहुत, पर नहीं माना। इन्हीं आदतों के कारण जमीन बिक गई और एक दिन दुर्बल होकर स्वयं भी चल बसा।

चन्दू : दादाजी, आप ठीक कहते हैं कि बुरी आदतों का फल भी बुरा होता है।

दादा : (दुख का अनुभव करते हुए) चन्दू, घर के बच्चे भूखे रहें और लोग बुरी आदतों में अपना तन और धन दोनों बर्बाद करें, यह कहाँ की समझ है?

रामलाल : यह तो बुराई है पिताजी।

दादा : (गंभीर स्वर में) बेटा रामलाल, अभी इन बुराइयों को मिटाने में समय लगेगा। विचार बदले हैं, सुधार हुआ है लेकिन अभी बहुत कुछ करना शेष है। यह नई पीढ़ी की जिम्मेदारी है।

बिरजू : दादाजी मेले में नहीं चलोगे क्या? देखो कितनी रात हो गई।

दादा : (हँसते हुए) बेटा, मैं तो तुम सबको हँसाने के लिए कह रहा था। भला, अब कहाँ चला जाता है। जाओ, भोजन कर विश्राम करो।

(सब चले जाते हैं।)

(पर्दा गिरता है।)

शब्दार्थ

विश्राम=आराम करना। **मोह**=प्रेम। **आनाकानी**=काम न करने का बहाना। **बर्बाद**=नष्ट। **शेष**=बाकी, बचा हुआ। **साँझ**=शाम का समय।

अनुभव विस्तार

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. (क) सही जोड़ी बनाइए—

- यह नई पीढ़ की – हमारा कर्त्तव्य है।
- परिश्रम के बिना – उसे समय पर देना है।
- बड़े-बूढ़ों का ध्यान रखना – कौन-सा काम हो सकता है?
- जो लिया है – जिम्मेदारी है।

(ख) दिए गए शब्दों में से उपयुक्त शब्द चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

- अब तो वह..... बड़ों के चरण छूता है। (रोजाना/कभी-कभी)
- वे कह रहे थे कि वह ..... पर आएगी। (होली/दीवाली)
- ..... को हम सबसे बहुत ही मोह है। (दादा-दादी/माता-पिता)
- आप ठीक कहते हैं कि बुरी आदतों का फल भी ..... होता है। (बुरा/भला)

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में दीजिए—

(क) रामलाल ने हमारा क्या कर्त्तव्य बताया है?
(ख) चन्दू बैंक क्यों गया था?
(ग) बुआजी की जमीन क्यों बिक गई थी?
(घ) बीरम काका के लड़के ने किस बात की अवज्ञा की?
(ङ) दादाजी ने चन्दू से माँ का हाथ बँटाने के लिए क्यों कहा?

लघु उत्तरीय प्रश्न

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन-से-पाँच वाक्यों में दीजिए—

(क) 'चन्दू में अब बहुत समझ आ गई है।' उसकी समझदारी के तीन बिन्दु लिखिए।
(ख) बुआजी को सँभालने के लिए दादाजी ने कौन-से दो कारण बताए?
(ग) दादाजी ने परिश्रम का क्या महत्व बताया?
(घ) 'बुरी आदतों का फल भी बुरा होता है' इस पंक्ति का क्या आशय है?
(ङ) इस पाठ में नई पीढ़ी के किस दायित्व की ओर संकेत किया गया है?

भाषा की बात

4. **निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध उच्चारण कीजिए—**
   संकोच, विश्राम, शिक्षाप्रद, घृणा, साँझ
5. **निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी शुद्ध कर लिखिए—**
   किस्त, प्रवन्ध, बंक, परीश्रम, दुवल, कायकर्रम
6. **निम्नलिखित शब्द युग्मों का वाक्यों में प्रयोग कीजिए—**
   अपना-अपना, अभी-अभी, दादा-दादी, बड़े-बूढ़े, कहा-सुनी।
7. **निम्नलिखित शब्दों के तत्सम रूप लिखिए—**
   खेत, चरन, साँझ, पास, दिन

ध्यान दीजिए

(दादा कभी-कभी ऐसी बातें कर परिवार में सरसता को और बढ़ा देते थे। एक बार चन्दू ने उनसे पूछ लिया था, ''दादाजी आपने अपने दाँत कहाँ रखे?''
दादाजी ने तब चन्दू के मुँह की ओर संकेत करते हुए कहा था - ''मेरे दाँत अपने मुँह में छिपाकर मुझसे पूछता है।'')
उपर्युक्त गद्यांश में पूर्ण विराम (।), अल्प विराम (,), प्रश्न वाचक चिह्न (?), योजक चिह्न (-), निर्देशक चिह्न (—), कोष्ठक चिह्न [( )] और उद्धरण चिह्न (‘‘ ’’) का प्रयोग किया गया है।

इन्हें भी जानिए

किसी भाषा में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख विराम चिह्न निम्नानुसार हैं—

क्र.	विराम चिह्न का नाम	चिह्न	कहाँ प्रयोग होता है	उदाहरण
1.	पूर्ण विराम	।	वाक्य के पूर्ण होने पर अंत में	राम पुस्तक पढ़ता है।
2.	अर्द्ध विराम	;	मुख्य और आश्रित वाक्यों को स्पष्ट करने के लिए	मेरे पास एक पुस्तक थी; वह भी खो गई।
3.	अल्प विराम	,	जहाँ वाक्य में अल्प समय ठहरना हो	सौरभ, गौरव, आदित्य और सचिन अच्छे खिलाड़ी हैं।
4.	प्रश्नवाचक चिह्न	?	जहाँ प्रश्न किया जाए	क्या आपने पुस्तक पढ़ ली है?
5.	विस्मयादि बोधक चिह्न	!	आश्चर्य, हर्ष, विषाद, घृणा, शोक, प्रार्थना आदि भावों को व्यक्त करने के बाद	हे भगवान, यह क्या हो गया? अरे! इतना बड़ा साँप। वाह! आपने तो कमाल कर दिया।

6.	उद्धरण चिह्न	‘ ’ ’’	किसी की कही गई बात को ज्यों का त्यों लिखने पर	‘रामचरित मानस’ एक महान ग्रंथ है। ‘‘भारत को समझना है तो स्वामी विवेकानंद को पढ़ो।’’
7.	योजक चिह्न	-	दो शब्दों के युग्म के मध्य में समानता सूचक सा-सी-से के पहले।	सुख-दुख, तन-मन-धन, चाँद-सा चेहरा।
8.	निर्देशक चिह्न	—	वाक्यों के मध्य में कथन के पहले।	तुलसी ने कहा— ‘‘समरथ को नहीं दोष गुसाई।’’
9.	कोष्ठक चिह्न	( )	क्रम सूचक अंकों का वर्णों, व्याख्यात्मक शब्दों तथा अभिनय संकेतों को ( ) कोष्ठक के भीतर लिखा जाता है।	अशोक (तलवार को लहराते हुए) सैनिको! आगे बढ़ो।

8. निम्नलिखित गद्यांश में यथा स्थान विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए —

लुई ने टोककर कहा महामंत्री नकारात्मक मत बोलो देश किससे बड़ा होता है साफ साफ बताओ कालवट ने कहा सुनिए सम्राट देश चरित्र से बड़ा होता है जिस देश के नागरिकों का चरित्र ऊँचा होता है अपने देश के लिए जिनके मन में अपार प्यार भरा होता है जो अपने देश पर न्यौछावर हो सकते हैं वह देश कभी पराजित नहीं हो सकता पर हमारे देश के चरित्र का दिवाला निकल रहा है विजय कैसे मिलेगी महाराज

अब करने की बारी

- चन्दू के चरित्र की जो बातें आपको अच्छी लगी, उन्हें अपनाइए जैसे-बड़े-बूढ़ों का ध्यान रखना।
- इस पाठ के आधार पर आप अपने व्यवहार में बदलाव लाइए और बड़ों से सम्मान प्राप्त कीजिए।
- ‘आदर्श परिवार’ विषय पर एक लघु निबन्ध लिखिए।
- प्रस्तुत एकांकी का मंच पर अभिनय कीजिए।

❑❑